रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग डी.के. कालेज
डुमराँव बक्सर बिहार

'घनानंद की प्रमुख पंक्तियाँ'

यों घन आनन्द छावत भावत,
जान सजीबन ओर ते आवत ॥
लोग है लागि कवित्त बनावत,
मोहि तो मेरे कवित्त बनावत ॥

अति सुधौ सनेह को मारगु है,
जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं ॥
तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला
मन लेहु पे देहु छटांक नहीं ॥

हीन भय जल मीन अधीन
कहा कछु मो अकुलानि समानै ॥

प्रेम की महोदधि अपार हरि के
विचार खरे अवरन भरे है उठि जानको।

उरजिन बसी है हमारी अँखियानी,
देखो सुबस सुदेव जहाँ रावरे बसत हों।

जमुना के तीर केलि कोलाहल भीर
ऐसी पावन पुलिन पै पतित परे रहिरो॥

रावरे, रूप की रीति अनूप
नयौ नयौ लागत ज्यौं-ज्यौं निहारिये ॥

उघरो जग छाय रहै घन आनंद,
चातक ज्यौं तकिए अब तो ।

कहिए सु कहाँ, अब मौन भली,
नहि खोवते ज्यौं हमें पावते न्यू ॥

झूठ की सचाई छाक्यौ त्यों हित कचाई पाक्यो,
तकि गुबगन घनआनंद कहा गनौ ॥

अंतर की किधौं अंत रहौ
दृग फारि फिरौं की अमागनि भीरौ ॥

अलकै अति सुन्दर आनन गौर
छके दृग राजति कानन छवै ।

तीछन ईछन बान बखान,
पैनी दसाहि लै सान चढ़ावत ।

कबहूँ वा बिसासी सुजान के
आँगन मों अंसुवानि लै बरसौ ।

अंग अंग तरंग उठै दुति की,
परिहैं मनो रूप अबै धर च्वै ॥

हिय में जु आरति सुजारति उजारति है
मारति मरो है जिय डारति कहा कहीं ॥

बदरा बरसै रितु में घिरकै नित ही अखियाँ उघरी बरसैं।

यह कैसो संजोग न बूझि परै
जु वियोग न क्यों हूँ बिछोहतु हैं।।

गति सुनि हारी, देखि थकानि मैं चलि जाति
थिर चर दसा कैसी ढकी उघरति है।

परकारज देह को धारे फिरौ
परजन्य! जथारथ है दरसौ।

जगत के प्रान ओछे बड़े का समान
घन आनन्द निधान सुखदान दुखियानि दै।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, डी.के.कालेज
'डुमरॉव बक्सर बिहार'